31-5-67 31-5-67 ओम् शान्तिः रात्री क्लास (81)

बच्चे जानते है कि बाप परमपिता परमात्मा पढा रहे है। भक्ति मार्ग मे गायन भी होता है। बाबा कल्प-2 आते है नई दुनियां स्थापन करने। बच्चे जानते है कि भारत मे ही आदी सनातन देवी देवता धर्म था। अब जो इतेन धर्म है वो सब वहां नही होते है। 5000वर्षो की बात है कि सिर्फ हमारा ही खण्ड था। और कोई खण्ड नहीथा। अब फिर से हमारी राजधानी स्थापन हो रही है। तुम बच्चे जानते हो कि अब स्वर्ग नर्क किसको कहा जाता है। बाबाआया हुआ है। कहते है कि मुझे प्रकृती का आधार लेना पड़ता है। बाप ही ज्ञान का सागर सुख का सागर है। शान्तिः पवित्रता का सागर है। उनसे वर्सा भी मिलना है। यह भी पता पडा है कि हम ही देवतोय थे फिर हम ही देवतोय बनेंगे। पहले तो तुमको कुछ भी पता नही था। बाप ही आकर बताते है। महिमा ही सारी उनकी है। तुम बच्चे ही जानते हो कि कैसे हम राजाई गंवाते है कैसे फिर हम पाते है। 5000वर्ष पहले यह स्वर्ग का गेट खुला था अब फिर खुलता है। मनुष्यों की बुधी काम नही करती है। ड्रामा अनुसार जिनकी तकदीर मे है वो ही समझ लेते है। बच्चो को पता है कि क्या होता है। यह जो भी इतेन खण्ड है वो सभी अभी खलास हो जावेंगे। अमरीका कितनी बडी है। फिर नही रेहगी। बच्चो को दिन प्रति दिन सा० होता रेहगा। यह भी तुम्हारी बुधी मे है। कहते भी हो कि बाबा हम 5000वर्ष पहले मिसल अब भी राज्य पाने पुरर्षाथ कर रेह है। खुशी होती है कि यहसब नही रेहगा। बाप कहते है कि तुम अपना राज्य स्थापन कर रेह हो जहां पर कोई खिटपिटनही रहती है। बाहुबल से कोई भी विश्व के मालिक बन नहीसकते। है तो भाई-2। परन्तु आपस मे कितेन कड़े-2 दुश्मन है। क्रिश्चनसको आपस मे लड़वा कर माखन तुम खा जावेंगे। बच्चो को अब समझ मे आया है कि यह आपस मे सब लड़ कर खत्म हो जावेंगे। फिर राजाई भारत को मिलनी है। तुम साक्षी होकर देखो। ऐक्ट भी बजानी है। तुम जानते हो कल्प पहेल मुआफिक स्थापना विनाश होना है। यह चक्र फिरता रहता है। एक सेकिंड नां मिले दुसरे से। यह ज्ञान भी तुम्ही बच्चो को है। जानते हो इस पढाई से हम विश्व का मालिक बनते है। यह ल-न सतयुग के मालिक थे इन्होने कैसे राजाई ली यह तुम्ही को मालूम है। बाप कहते है इसी समय मे ऐक्ट मे आता हूं। यह तुम जानते हो कि इस रथ द्वारा बाबा हमको पढ़ाते है। हम आत्मोय पढ़ती है। यह एक ही बार पढाते है। उंच ते उंच बाबा है तो पढ़ाई भी उंच पढाते होगें। तुम्हारी कितनीगुप्त कमाई है। पढाई सौस आफ इनकम होती है। तुम जानते हो कि हम यह बनते है। वहां पर पैसो आद की गिनती नही होती है। यह भी समझते हो कि शास्त्रो मे यह सब बाते नही है। यह पढाई सौस आफ इनकम है। भक्ति मार्ग मे तो कुछ भी फायदा नही है। वो तो कोई पढाई नही है। ऐम आब्जेक्ट कुछ भी नही होता। वेद पढ़ने से क्या मिलेगा? कुछ भी नही। टीचर चाहिये नां। और ऐम आब्जेक्ट चाहिये। हर एक अपने दिल से पूछ सकते है कि हम कितेन श्रेष्ट बने है। कितना पढ़ते है। बुधी ही मोटी है तो टीचर भी क्या करेगा। कहेंगे तकदीर। जितना श्रीमत पर चलेंगे ~~उतना श्रे~~ उतना ही श्रेष्ट बनेंगे। डिफीकल्टी तो कोई है नही। शरीर निर्वाह तो करना ही है। बुधी मे है कि पावन बनना है। बाबा कहते है कि सवेरे उठ कर याद करो। जानते हो कि बाप ही की याद से हम विर्कमा जीत बनेंगे। इसलियेही बाप को याद करना पड़ता है। तुम जानते हो कि हम शिव बाबा पास आये है वो हमको ब्रह्मा तन द्वारा पढ़ाते है। यह है पढाई जिससे तुम ऐवर हेल्दी बनेंगे। योग से ऐवर हेल्दी बनेंगे। स्वर्ग मे तो सदैव खुशी ही खशी है। कहते भी है कि स्वर्ग पधारा। परन्तु बाप अभी तुम बच्चो को स्वर्ग का मालिक बनाते है। अभी तुम यह शरीर छोड़ कर घर जाने का पुरर्षाथ कर रहे हो। अभी आवेंगे नई दुनियां मे। इसलिए बाप से प्रतिज्ञा करनी है। स्वर्ग चलना है तो पावन जरुर बनना है। बाबा हम तो पवित्र जरुर बनेंगे। तुम बच्चे राजधानी स्थापन कर

[illegible] -2 [illegible]